



# Ancient Vedic Mantras and Rituals





## Rama Ekadashi 2025 | रमा एकादशी व्रत कथा, पूजन विधि और महत्व | PDF

रमा एकादशी (Rama Ekadashi) का व्रत करने से व्यक्ति पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक में प्रवेश करता है। दिवाली से पहले पड़ने वाली रमा एकादशी सुख, समृद्धि और वृद्धि का आशीर्वाद देती है। एकादशी के दिन श्रीहरि विष्णु की पूजा करने की परंपरा है, लेकिन इस एकादशी के प्रताप से लक्ष्मी-नारायण की विशेष कृपा बरसती है और आर्थिक संकट से मुक्ति मिलती है।

कथा के बिना रमा एकादशी का व्रत अधूरा माना जाता है। इस वर्ष की रमा एकादशी व्रत **17 अक्टूबर 2025 शुक्रवार को रखा जायगा**।

### रमा एकादशी व्रत कथा

पौराणिक युग में मुचुकुंद नामक एक राज्य था। वह बड़ा सत्यवादी तथा विष्णुभक्त था। उनका राज्य पूर्णतः भ्रष्टाचार से मुक्त था।

उनकी चन्द्रभागा नाम की एक बेटी थी जिसका विवाह राजा सुभान के बेटे से हुआ था। राजा मुचुकुंद ने बड़े नियमों के अनुसार एकादशी का पालन किया और उनके राज्य में सभी लोग इस नियम का सख्ती से पालन करते थे।



एक बार कार्तिक माह में राजकुमार सोभन अपनी ससुराल आया हुआ था। इस समय रमा एकादशी (Rama Ekadashi) का व्रत आ रहा था। सोभन की पत्नी चंद्रभागा सोचती थी कि उसके पति का दिल बहुत कमजोर है।

वे एकादशी का व्रत कैसे करेंगे, जबकि पिता के यहां तो सभी को व्रत करने की आज्ञा है। चंद्रभागा ने पति को बताया कि यहां जीव-जंतु भी एकादशी के दिन भोजन नहीं करते हैं, ऐसे में यदि राज्य का दामाद व्रत नहीं करेगा तो उसे राज्य छोड़ना पड़ेगा।

चंद्रभागा से यह सुनने के बाद, शोभन को अंततः रमा एकादशी (Rama Ekadashi) का व्रत करना पड़ा। हालाँकि, पारण पूरा होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद चंद्रभागा अपने पिता के घर में रहने लगी। यहां रहने के दौरान वह अक्सर पूजा-पाठ और उपवास करती थी।

एकादशी व्रत के प्रभाव से अगले जन्म में शोभन को देवपुर का राज्य प्राप्त हुआ जो धन-संपत्ति से परिपूर्ण था। एक दिन मुचुकुंद नगर के एक ब्राह्मण ने शोभन को देखा और उसे पहचान लिया।

ब्राह्मण शहर लौटता है और चंद्रभागा को पूरी घटना बताता है। चंद्रभागा ने कहा कि वह आठ वर्षों से एकादशी का व्रत कर रही है, जिससे उसके पति शोभन को पुण्य फल की प्राप्ति होगी। चंद्रभागा शोभन के पास जाती है और उसे एकादशी व्रत के सभी पुण्य सौंप देती है।



इसके बाद मां लक्ष्मी की कृपा से देवपुर में सौभाग्य, सुख-समृद्धि बढ़ती है और चंद्रभागा और शोभन एक साथ रहने लगते हैं।

## रमा एकादशी व्रत पूजा विधि

- रमा एकादशी (Rama Ekadashi) के दिन सुबह स्नान के बाद भगवान विष्णु की मूर्ति को मंदिर में स्थापित किया जाता है। यदि आपके पास पहले से ही कोई मूर्ति है तो भगवान विष्णु पर गंगा जल डालें।
- उसके तुरंत बाद. इसके बाद पूरे विधि-विधान से भगवान विष्णु की पूजा करें।
- इसके बाद भगवान विष्णु को धूप, दीप, नैवेद्य और फूल चढ़ाएं।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। रमा एकादशी की लघु कथा पढ़ें।
- ब्राह्मणों को भोजन कराने और दान देने से आपको आशीर्वाद मिलेगा।

## रमा एकादशी व्रत का लाभ

पद्म पुराण के अनुसार जो व्यक्ति रमा एकादशी का व्रत करता है। भगवान विष्णु उससे बहुत प्रसन्न होते हैं और वह वैकुंठ पहुंच जाता है। इसके अलावा रमा एकादशी (Rama Ekadashi) का व्रत करने से व्यक्ति सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। इस संसार में देवी लक्ष्मी की पूजा करने की भी परंपरा है।

## व्रत के बारे में खास बातें

रमा एकादशी (Rama Ekadashi) की सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि करने के बाद व्रत करने के लिए संकल्प लें। जिस प्रकार आप व्रत कर सकते हैं, उसी के अनुसार संकल्प लें, जैसे- यदि पूरा दिन निराहार रहना चाहते या फिर एक समय फलाहार करना चाहते हैं।



इसके बाद विधि-विधान से भगवान श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। यदि आप स्वयं पूजा करने में असमर्थ हैं तो किसी योग्य ब्राह्मण को पूजा कराने के लिए आमंत्रित करें।

इसके बाद भगवान को भोग लगाया जाता है और भक्तों के बीच प्रसाद वितरित किया जाता है। इसी तरह रात्रि में भी भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करें। रात्रि के समय भगवान की मूर्ति के पास बैठकर श्रीमद्भागवत या गीता का पाठ करें।

अगले दिन ब्राह्मणों को आमंत्रित करें। ब्राह्मणों को भोजन करवा कर, दान-दक्षिणा देकर ससम्मान विदा करें। उसके बाद ही खाना खाएं। भगवान को मक्खन और चीनी का भोग लगाना बहुत अच्छा होता है।

### **रमा एकादशी के दिन भूलकर भी न करें ये काम**

रमा एकादशी के दिन पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ना चाहिए। घर में झाड़ू लगाने से चींटियों या छोटे-छोटे जीवों के मरने का डर होता है। और इस दिन किसी भी जीवित प्राणी को मारना पाप है। इस एकादशी पर बाल न काटें। रमा एकादशी (Rama Ekadashi) के दिन जितना हो सके कम बोलने की कोशिश करें।

ऐसा इसलिए क्योंकि संभावना है कि ज्यादा बोलने से आपके मुंह से गलत शब्द निकल जाएंगे। एकादशी के दिन चावल खाना भी वर्जित है। किसी का दिया हुआ भोजन न करें। अगर कोई फल प्रेमी है तो उसे केल, पालक, चुकंदर आदि नहीं खाना चाहिए। आप आम, केला, अंगूर, पिस्ता, बादाम आदि खा सकते हैं।



## Related Articles



विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र



श्री विष्णु जी आरती



# THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS  
CONTENT ON



[vedicprayers.com](https://vedicprayers.com)



Follow us on:

